

हूती वदिरोहियों का यूई पर हमला

प्रलम्बिस के लयि:

हूती, यमन की अवस्थति और उसके पड़ोसी देश, लाल सागर, अदन की खाड़ी, ड्रोन, शयि, सुन्नी, अरब स्परगि, ऑपरेशन राहत

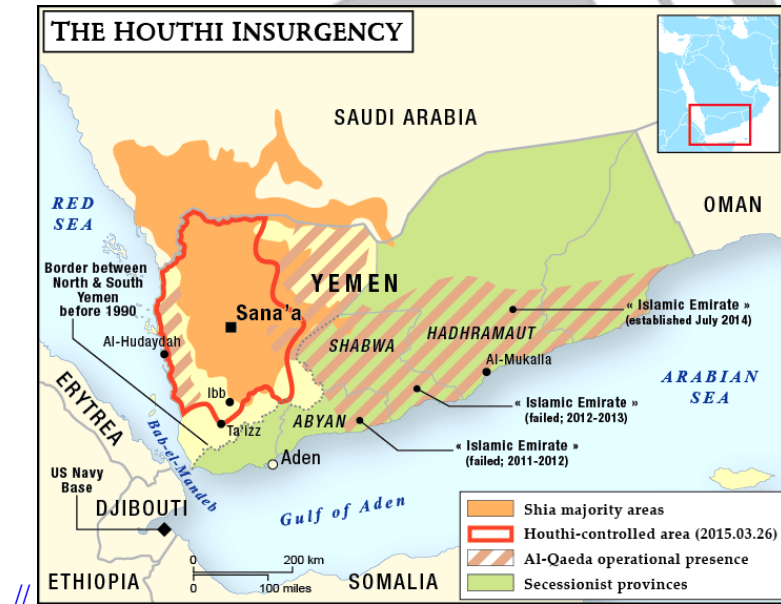
मेन्स के लयि:

हूती और संबंघति चतिरौँ, हूती संघर्ष का महत्त्व, भारत का हति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात (UAE) की राजधानी अबू धाबी में एक संदगिध [ड्रोन](#) हमले में कई वसिफोट हुए जसिमें दो भारतीय भी मारे गए है ।

- यमन के शयि हूती वदिरोहियों, जो लगभग सात वर्षों से राजधानी सना सहति देश के उत्तरी हसिंसों को नयितरति कर रहे हैं, ने इस हमले की जमिमेदारी ली है ।
- भारत ने इस तरह के अस्वीकार्य कृत्यों के खलिफ संयुक्त अरब अमीरात के साथ एकजुटता वयक्त की है ।
- इससे पहले वर्ष 2021 में [सऊदी की राजधानी रयिद पर हूती वदिरोहियों द्वारा बेलसिटकि मसिाइल हमला](#) कयिा गया था ।



प्रमुख बदि

- हूती :
 - हूती आंदोलन की जड़े "बलिवगि यूथ" (मुंतदा अल-शहाबल-मुमनि) में खोजी जा सकती हैं, जो हुसैन अल-हूती और उसके पति बद्र अल-दीन अल-हूती द्वारा 1990 के दशक की शुरुआत में स्थापति एक ज़ायदी पुनरुत्थानवादी समूह था ।
 - बद्र अल-दीन उत्तरी यमन में एक प्रभावशाली ज़ायदी मौलवी था । वर्ष 1979 की ईरानी क्रांति और 1980 के दशक में दक्षिणी लेबनान में हज़िबुल्लाह के उदय से प्रेरति होकर बद्र अल-दीन एवं उसके बेटों ने यमन के ज़ायदियों के बीच वशिल सामाजकि और धार्मकि नेटवर्क का नरिमाण कार्य शुरु कयिा, जो सुन्नी-बहुसंख्यक आबादी वाले देश का लगभग एक-तहिाई हसिंसा बनाते हैं ।

- लेकिन जब आंदोलन ने राजनीतिक रूप ले लिया और **अली अबदुल्ला सालेह (यमन में) के "भ्रष्ट" शासन पर हमला करना शुरू** कर दिया तो आतंकवाद के खिलाफ अमेरिका का युद्ध के लिये उनका समर्थन सालेह के लिये घातक बन गया।
- उसने खुद को अंसार अल्लाह कहा और सरकार के खिलाफ उत्तर में आदवासियों को लामबंद किया।
- वर्ष 2004 में सालेह की सरकार ने **हुसैन अल हूती के खिलाफ** गरिफ्तारी का वारंट जारी किया और इस गरिफ्तारी के वरिध में वदिरोह की शुरुआत हुई।
- सितंबर 2004 में **सरकारी सैनिकों ने वदिरोहियों पर हमला** कर हुसैन को मार डाला। तब से सरकार ने प्रतरोह को समाप्त करने के लिये **जायदी के गढ़ सादा में कई सैन्य अभियान शुरू** किये जैसे स्थानीय रूप में **हूती आंदोलन** कहा गया।
- लेकिन इसने हूती वदिरोहियों को मजबूत किया जिन्होंने वर्ष 2010 तक यानी जब यह युद्ध वरिम की स्थितितक पहुँच गया तो सरकारी सैनिकों की मदद से सादा पर कब्ज़ा कर लिया था।

जायदी

- जायदी शायियों की सबसे पुरानी शाखा है। जायदियों का नाम ज़ैद बनि अली, इमाम अली के परपोते, पैगंबर मोहम्मद के चचेरे भाई और दामाद के नाम पर रखा गया है, जो शायी, सुन्नी और जायदी का सम्मान करते हैं।
- जायद बनि अली ने आठवीं शताब्दी में उम्मायद खलीफा के खिलाफ वदिरोह का नेतृत्व किया था। जिसमे उसकी मृत्यु हो गई, लेकिन उसकी शहादत के कारण जायदी संप्रदाय का उदय हुआ। हाँलाकि धर्मशास्त्र और व्यवहार के संदर्भ में जायदी को इस्लाम की शायी शाखा का हिस्सा माना जाता है। वे ईरान, इराक और लेबनान के 'ट्वेल्वर' शायियों से भिन्न हैं।
- सदियों से यमन के भीतर जायदी एक शक्तिशाली संप्रदाय था।
- वर्ष 1918 में ओटोमन साम्राज्य के पतन के बाद जायदी देश में एक राजशाही (मुतावककलिति साम्राज्य) स्थापित करना चाहते थे लेकिन उनका प्रभुत्व वर्ष 1962 में उस समय समाप्त हो गया जब मसिर समर्थित गणतंत्रों ने राजशाही को उखाड़ फेंका।
- **हूती के उदय का कारण:**
 - वर्ष 2011 में जब ट्यूनीशियाई और मसिर के तानाशाहों को गरिने वाले अरब स्प्रिंग वरिध के हिस्से के रूप में वरिध प्रदर्शन शुरू हो गए, तो हूती (Houthis), उस समय अपनी सैन्य जीत से आश्वस्त थे और सदाह में उन्हें जो समर्थन मिला, उसने आंदोलन का समर्थन किया।
 - राष्ट्रपति सालेह, (एक जायदी) जो 33 वर्षों तक सत्ता में थे, ने नवंबर 2011 में इस्तीफा दे दिया तथा अपने डपिटी, अबदराबुह मंसूर हादी, जो एक सऊदी समर्थित सुन्नी था को बागडोर सौंप दी।
 - सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के संरक्षण में यमन ने आंतरिक मतभेदों को हल करने के लिये एक राष्ट्रीय वार्ता शुरू की।
 - हूथी इस संवाद का हिस्सा थे लेकिन वे हादी की संक्रमणकालीन सरकार (Transitional Government) के साथ ही इस संवाद से बाहर हो गए तथा यह दावा करते हुए कि प्रस्तावित संघीय समाधान, जो जायदी-प्रभुत्व वाले उत्तर को दो भूमि-बंद प्रांतों में विभाजित करने की मांग करता था, का उद्देश्य आंदोलन को कमजोर करना था।
 - वे शीघ्र ही वदिरोह में पुनः शामिल हो गए। सालेह जिन्हें अंतरिम सरकार और उसके समर्थकों द्वारा दरकिनार कर दिया गया था। अपने पूर्व प्रतदिवंदवियों के साथ हाथ मलिया और एक संयुक्त सैन्य अभियान शुरू किया।
 - जनवरी 2015 तक हूती-सालेह गठबंधन (Houthi-Saleh alliance) ने सना और उत्तरी यमन के अधिकांश हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया था, जिसमें महत्वपूर्ण लाल सागर तट भी शामिल था। (बाद में हूती, सालेह के खिलाफ हो गए और दिसंबर 2017 में उसे मार डाला)।
- **यमन पर सऊदी अरब के हमले का कारण:**
 - यमन में हूती वदिरोहियों के तेज़ी से उदय ने सऊदी अरब में खतरे की घंटी बजा दी, जो कि उन्हें ईरानी प्रॉक्सी के रूप में देखता है।
 - सऊदी अरब ने मार्च 2015 में हूती वदिरोहियों के खिलाफ त्वरित जीत की उम्मीद में एक सैन्य अभियान शुरू किया था, लेकिन सऊदी अरब के हवाई हमले के बावजूद हूती वदिरोही पीछे नहीं हटे।
 - ज़मीनी स्तर पर कोई प्रभावी सहयोगी नहीं होने और कोई वशिष्ट योजना न होने के कारण, सऊदी के नेतृत्व वाला अभियान बना किसी ठोस परिणाम के समाप्त हो गया। पछिले छह वर्षों में हूती वदिरोहियों ने सऊदी हवाई हमलों के जवाब में उत्तरी यमन के सऊदी शहरों पर कई हमले किये हैं।
 - वर्ष 2019 में हूती वदिरोहियों ने दो सऊदी तेल प्रतषिठानों पर हमले का दावा किया था, जो कि देश के तेल उत्पादन के आधे हिस्से हेतु उत्तरदायी है (हूती वदिरोहियों के दावे को वशिषज्जों और सरकारों द्वारा खंडित कर दिया गया था, जिन्होंने कहा कि वदिरोहियों के लिये यह हमला करना संभव नहीं था। अमेरिका ने इसके लिये ईरान को दोषी ठहराया था)।
 - हूती वदिरोहियों ने उत्तर में एक सरकार का गठन किया। युद्ध में सऊदी अरब और हूती दोनों के खिलाफ गंभीर आरोप हैं।
 - जबकि सऊदी बम वसिफोटों में बड़ी संख्या में नागरिक मारे गए, हूती वदिरोहियों पर अधिकार समूहों और सरकारों द्वारा, सहायता को रोकने, घनी आबादी वाले क्षेत्रों में बलों को तैनात करने तथा नागरिकों व शांतपूरण प्रदर्शनकारियों के खिलाफ अत्यधिक बल का उपयोगप्रयोग करने का आरोप लगाया गया।
- **हूती वदिरोहियों के संयुक्त अरब अमीरात पर हमला करने का कारण:**
 - यह पहली बार नहीं है जब हूती वदिरोहियों ने संयुक्त अरब अमीरात पर हमला किया हो। वर्ष 2018 में जब संयुक्त अरब अमीरात समर्थित बल यमन में आगे बढ़ रहे थे, हूती वदिरोहियों ने अमीरात के खिलाफ हमलों का दावा किया।
 - तब संयुक्त अरब अमीरात ने यमन से अपने सैनिकों को वापस ले लिया और अदन स्थित वदिरोहियों के एक समूह, दक्षिणी ट्रांजीशनल परिषद को सामरिक समर्थन की पेशकश की, जो संयुक्त अरब अमीरात के सऊदी समर्थित सरकारी बलों से भी लड़ रहा था।
 - इस अवधि के दौरान हूती वदिरोही पूरी तरह से सऊदी अरब और यमन के अंदर सऊदी समर्थित बलों पर केंद्रित रहे।
 - लेकिन हाल के महीनों में, जायंट्स ब्रिगिड्स, एक मलिशिया समूह, जो बड़े पैमाने पर दक्षिणी यमनियों (यूएई द्वारा समर्थित) से बना है और संयुक्त बलों (मारे गए पूर्व राष्ट्रपति सालेह के भतीजे के नेतृत्व में मलिशिया) ने हूती वदिरोहियों के खिलाफ बंदूक उठा ली थी।
 - अब हमलों के साथ ऐसा प्रतीत होता है कि हूती वदिरोहियों ने अमीरात को एक स्पष्ट संदेश भेजा है कि वह यमन से दूर रहे या अधिक हमलों का सामना करें।
- **चिंताएँ:**

- यमन रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ने वाले जलडमरूमध्य पर स्थित है, जिसके माध्यम से दुनिया के अधिकांश तेल शिपमेंट गुज़रते हैं।
 - यह अल-कायदा या आईएस से जुड़े-देश के हमलों के खतरे के कारण भी चर्चित करता है -जो अस्थिरता को उत्पन्न करते हैं।
 - अमेरिका द्वारा वदिरोहियों को आतंकवादियों के रूप में सूचीबद्ध करने और छह साल से संघर्ष को कम करने के प्रयासों के बाद भी हूती वदिरोहियों ने राज्य पर सीमा पार हमले तेज कर दिये हैं।
 - संघर्ष को शायि शासति ईरान और सुन्नी शासति सऊदी अरब के बीच क्षेत्रीय सत्ता संघर्ष के हिससे के रूप में भी देखा जाता है।
- **भारत का हति:**
- भारत के लिये यह एक ऐसी चुनौती है जिसे तेल सुरक्षा और इस क्षेत्र में रहने वाले 8 मिलियन प्रवासियों को ध्यान में रखकर नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता है जनिसे सालाना 80 बलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का प्रेषण होता है।
- **भारतीय पहल:**
- **ऑपरेशन राहत:**
 - भारत ने अप्रैल 2015 में यमन से 4000 से अधिक भारतीय नागरिकों को निकालने के लिये बड़े पैमाने पर हवाई और समुद्री अभियान शुरू किये।
 - **मानवीय सहायता:**
 - भारत ने अतीत में यमन को भोजन और चकित्सा सहायता प्रदान की है और पछिले कुछ वर्षों में हजारों यमन नागरिकों ने भारत में चकित्सा उपचार का लाभ उठाया है।
 - भारत ने वभिन्न भारतीय संस्थानों में बड़ी संख्या में यमन नागरिकों के लिये शक्ति की सुवधा जारी रखता है।

स्रोत- द हदि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/houthis-attack-uae>

